एस. एस. कॉलेज, जहानाबाद।
विभाग हिन्दी
विषय - ~~हिन्दी रचना कल~~ चन्द्रगुप्त नाटक
वर्ग - स्नातक ~~प्रतिष्ठा~~ प्रतिष्ठा भाग - 1
शिक्षण माध्यम - पाठ्य-पुस्तक
समय 11 बजे से 12 बजे तक 26.8.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - गीत योजना

प्रिय छात्र - छात्राओं !

पिछली कक्षा में चन्द्रगुप्त नाटक का पहला गीत 'तुम कनक किरण के अंतराल में लुक छिप कर चलते हो क्यों?' वाला गीत पर आपने विचार किया होगा। सामान्य दर्शक की तो बात ही क्या स्नातक कक्षा के विद्यार्थी भी बिना छायावाद की पृष्ठभूमि को समझे इस कविता कथा गीत को समझ नहीं सकते। छायावाद के आधार स्तम्भ के जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी वर्मा। इन चारों ने ही छायावाद की स्थापना कविता में की थी जिसका प्रमुख गुण था प्रकृति का मानवीकरण और मानव को भी प्रकृति के रूप में देखना। ~~पर~~

नाटक के इस गीत में भी प्रकृति को मानव के रूप में चित्रित कर नारी के सौन्दर्य के प्रकृति में रूपायित करके दिखलाया गया। कवि वर्णन करता है नायिका के सौन्दर्य का पर प्रकृति के माध्यम से वह सौन्दर्य निखारा जाता है। पंक्तियों पर जरा ध्यान दें। पिछली कक्षा में पूरी कविता ~~[illegible]~~ पंक्तियाँ आपके सामने रखी गई थीं

स्वर्ग की स्वर्णिम किरणों बूंदों से चलकर जो पृथ्वी पर आ रही हैं उसी के अन्तराल में नायिका के आगमन के सौन्दर्य को चित्रित करते हुए गीत में गीतकार कहता है तुम झुक-झुक कर क्यों चलती हो। तुम्हारे झुके हुए मस्तक से गर्व झलक रहा है। जवानी के बादल रस की वर्षा कर रहे हैं ऐसे में तुम मौन क्यों हो? यही प्रश्न इस गीत में उठाया गया है। पर जो गीत में सम्बोधन है — 'हे लाज भरे सौन्दर्य बतला दो मौन बने रहते हो क्यों?' वह प्रकृति की ओर इंगित करता है। यहाँ सौन्दर्य मांसल न होकर कल्पना की दुनियाँ में प्रकृति परक अलग सौन्दर्य की आभा डालता है। आगे की सभी पंक्तियों में भी प्राकृतिक दृश्य को ही नायिका की देह यष्टि से जोड़ा गया है। मधु सरिता के समान हँसती नायिका की हँसी स्वयं को पीते हुए दिखलाकर प्रश्न उठाना यथार्थ को कल्पना और प्रकृति से जोड़ देना है।

कुल मिलाकर पाठक के लिए यह पहला गीत भाव-प्रवण होते हुए भी उपदेश नहीं है। इसी तरह अधिकांश गीत कविता बन गई हैं।

([illegible])

26.8.20